पत्रिका

अस्मिता और अधिकार का परिचायक

30 साल की यात्रा...

20 साल की घोषणा और अधूरा सपना

आज 9 अगस्त है, यह दिन सिर्फ कैलेंडर की तारीख़ नहीं, बल्कि हमारी आत्मा की गहराई में बसी एक पुकार है। यह दिन उन लाखों-करोड़ों आदिवासी और मूलनिवासी भाइयों-बहनों की स्मृति, संघर्ष और सपनों का प्रतीक है, जो धरती पर सबसे पहले बसे, पर सबसे अंत में सुने गए।

अनुभव शोरी
आदिवासी चिंतक

संयुक्त राष्ट्र संघ ने 9 अगस्त को अंतर्राष्ट्रीय आदिवासी दिवस घोषित किया, ताकि दुनियाभर के आदिवासी समुदायों की आवाज को वैश्विक मंच मिले, उनकी अस्मिता की रक्षा हो, और उनके अस्तित्व पर मंडराते खतरों के खिलाफ दुनिया खड़ी हो सके। यह दिवस इसलिए जन्मा क्योंकि आदिवासी और मूलनिवासी समुदाय सदियों से शोषण, उपेक्षा और विस्थापन के चक्र में फंसे रहे हैं।

उनकी भूमि, जंगल और नदियां खतरे में हैं, उनकी भाषाएं और परंपराएं मिटाई गई और विकास के नाम पर उन्हें उनके ही घर से बेघर किया गया। संयुक्त राष्ट्र ने इस दिन को एक अवसर बनाया ताकि उनकी पारंपरिक जमीन, जल और जंगल के अधिकार सुरक्षित हों। तेजी से विलुप्त होती भाषाओं और संस्कृति का संरक्षण हो और विकास की प्रक्रिया में उनकी बराबरी की भागीदारी सुनिश्चित की जा सके। यह कोई साधारण उत्सव नहीं, बल्कि यह संघर्ष, जागरूकता और अस्तित्व की पुकार है। आज दुनिया की लगभग 6 प्रतिशत आबादी 90 देशों में फैले 5000 से अधिक विशिष्ट संस्कृतियों और 7000 से अधिक भाषाओं के साथ अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है।

20 प्रतिशत से अधिक आदिवासी अब भी चरम गरीबी में जी रहे हैं। गैर आदिवासियों के मुकाबले उनकी औसत आयु 20 साल कम है। वे दुनिया की 28 प्रतिशत भूमि के पारंपरिक मालिक हैं, पर उनमें से सिर्फ 5 से 8 प्रतिशत पर ही कानूनी अधिकार मान्य है। पिछले 10 वर्षों में, पर्यावरण और भूमि की रक्षा करते हुए सैकड़ों जागरुक कार्यकर्ताओं की हत्या हुई, जिनमें 60 प्रतिशत आदिवासी थे।

विशेषज्ञों का कहना है कि अगले 100 वर्षों में 90 प्रतिशत आदिवासी भाषाएं विलुप्त हो सकती हैं। 1994 में पहली बार अंतर्राष्ट्रीय आदिवासी दिवस मनाया गया, और 2007 में संयुक्त राष्ट्र ने मूलनिवासी अधिकार घोषणा पारित की। इन 20 वर्षों में कुछ उपलब्धियां मिली, पर असल न्याय अब भी दूर है। समीक्षा जरुरी है क्योंकि संसाधनों का दोहन तेज हुआ है, भाषाएं तेजी से खत्म हो रही हैं, और सांस्कृतिक अस्मिता पर खतरा मंडरा रहा है।

09/08/2025 | Jagdalpur | Page : 14
Source : https://epaper.patrika.com/